आधुनिक रंगमंच और हिंदी नाट्य साहित्य

वृषाली वी. कोले

छात्र, के.एल.ई. के जी.आई. बागेवाड़ी कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, निपानी।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17264101

ABSTRACT:

यह शोध पत्र आधुनिक हिंदी रंगमंच और नाट्य साहित्य के विकास और महत्त्व का अन्वेषण करता है। यह आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक नाट्यकला की यात्रा को रेखांकित करता है, जिसमें संस्कृत परंपरा, लोक नाट्य और 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण का प्रभाव शामिल है। इसमें भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी नाटक का जनक मानते हुए, जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक और मोहन राकेश के यथार्थवादी एवं अस्तित्ववादी नाटकों के योगदान पर प्रकाश डाला गया है। यह पत्र नाट्य साहित्य को मात्र मनोरंजन न मानकर समाज के दर्पण के रूप में देखता है, जो सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय संघर्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें बाल रंगमंच की भूमिका और भारतीय एवं पश्चिमी नृत्य-नाट्य शैली के अंतर को भी स्पष्ट किया गया है। निष्कर्षतः, आधुनिक नाट्य रंगमंच आत्ममंथन और समाज सुधार की प्रेरणा देता है।

KEYWORDS:

रंगमंच, नाट्य साहित्य, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मोहन राकेश, यथार्थवाद.

रंगमंच साहित्य - मानव सभ्यता के सांस्कृतिक विकास में रंगमंच [थिएटर] का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। आदिकाल से ही लोक जीवन के सुख-दुःख, आस्थाएँ, संघर्ष और स्वप्न नाट्यकला के माध्यम से अभिव्यक्त होते रहे हैं। संस्कृत नाट्य परंपरा के पश्चात् भारत में आधुनिक रंगमंच का विकास 19वीं शताब्दी में हुआ जब सामाजिक परिवर्तन, अंग्रेजी शिक्षा, पुनर्जागरण और स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना ने साहित्य और नाटक दोनों को नए स्वर दिए।

नाट्य साहित्य - नाट्य साहित्य हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के दर्पण के रूप में कार्य करता है। नाटक में संवाद, मंचन, अभिनय, संगीत और दृश्य प्रभावों के माध्यम से जीवन की विविध परिस्थितियों को प्रस्तुत किया जाता है। यह साहित्य का एक ऐसा माध्यम है, जो जनसामान्य तक सीधे पहुँचता है और तत्काल प्रभाव छोड़ता है।

रंगमंच

रंगमंच नाट्यकला की जीवंत प्रस्तुति है। यह साहित्य, अभिनय, संगीत, नृत्य, मंच सज्जा और दर्शक इन सब का समन्वय है। नाट्यकला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण बनकर शिक्षा, संदेश और जागरूकता प्रदान करना भी है।

प्रारंभिक काल:

हिंदी नाट्य की जड़ें संस्कृत नाटकों (कालिदास, भास, शूद्रक आदि) और लोक नाट्य परंपरा (रामलीला, नौटंकी, भवाई, स्वांग) में मिलती हैं।

आधुनिक हिंदी रंगमंच का प्रारंभ:

भारतेन्दु हरिश्चंद्र (19वीं शताब्दी) को "आधुनिक हिंदी नाटक का जनक" माना जाता है। उनके नाटक अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य पर आधारित थे।

द्विवेदी युग:

जयशंकर प्रसाद का योगदान - स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना के साथ नाटकों का लेखन।

प्रगतिवादी युग (1936 के बाद)

समाजवादी और यथार्थवादी दृष्टिकोण। प्रेमचंद का कर्मभूमि, संग्राम, इप्टा का प्रभाव। नाटक सामाजिक शोषण, किसान-श्रमिक की समस्याओं पर केंद्रित।

आधुनिक रंगमंच (1950 के बाद):

मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन, आधे अधूरे) - अस्तित्ववादी और यथार्थवादी नाटक। धर्मवीर भारती - महाभारत की पृष्ठभूमि से आधुनिक चिंतन।

रंगमंच की विशेषताएँ:

» सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य।

» लोक नाटक और आधुनिकता का समन्वय।

» ऐतिहासिक और पौराणिक कथानक के माध्यम से समकालीन जीवन का चित्रण।

» व्यक्ति और समाज के बीच संघर्ष का यथार्थवादी रूप।

» परिवेश का निर्माण होता है।

बाल रंगमंच:

बच्चे छोटे-छोटे नाटक रचना में पटु होते हैं। वे हर किसी का स्वांग भरकर कई प्रकार नाटक खेलते हैं - 'चोर और साहूकार', 'बहू-बना', 'जिन्ना और परी'। कई बार बच्चे एक साथ ही दो-दो तीन-तीन पात्रों का अभिनय करते हैं। कथकली के अभिनेता की भाँति बच्चों को बहुत कम सामग्री की आवश्यकता होती है। भारत में बाल रंगमंच की लहर पिछली शताब्दी से ही आरंभ हुई है। हर बच्चे को पात्रों के संवाद और उनका अभिनय स्मरण था। नई दिल्ली में बच्चों के नाटक-प्रशिक्षण का एक केंद्र शिव-निकेतन है। हमारे देश में बच्चों के नाटक की यह लहर आगे बढ़ सकती है, यदि हम नाटक को उनके विकास का एक आवश्यक साधन समझें।

नाट्य साहित्य:

प्राचीन भारत में अगर कोई नाट्य के संबंध में बात करता था तो इसका अर्थ यह होता था कि इसमें नृत्य भी शामिल है। इतिहास के आरंभ में जब देवता और मनुष्य एक-दूसरे के निकट थे, उस समय की किंवदंती है कि शिवजी ने भरत मुनि के एक नाटक को देवलोक में देखा और उन्हें यह सहमति दी कि नाटक में नृत्य भी सम्मिलित करें। संस्कृत शब्द नृत्त (अभिनय) नृत्य (नाच) शब्द से उत्पन्न हुआ है, जो नाट्य कला से संबंधित है। नृत्य-नाट्य में पूरी कहानी मंच पर केवल नृत्य द्वारा खेली जाती है। भारतीय नृत्य-नाट्य पश्चिमी नृत्य-नाट्य की अपेक्षा बहुत अधिक प्रचलित है। दोनों की शैली में गुणात्मक अंतर है। पश्चिमी नृत्य-नाट्य आँखों और हथों की भाषा नहीं जानता। पश्चिमी शास्त्रीय नृत्य-नाट्य का विषय सामाजिक है। भारतीय नृत्य-नाट्य की जड़ें पौराणिक और धार्मिक गाथाओं में हैं और इनमें गहन आध्यात्मिकता है। पश्चिम में निर्देशकों ने अपनी विशेष रुचि के अनुसार नृत्य-नाट्य में संगीत और चित्रकला को प्राण दिया, उतना ही महत्व दिया, जितना नृत्य को। भारतीय नृत्य-नाट्य की पृष्ठभूमि पूर्णतः सादी होती है।

पश्चिमी नृत्य-नाट्य में निर्देशक प्रत्येक पात्र की गतिविधि और स्थान नियत करता है और दूसरे पात्रों के साथ उसके मिलकर नाचने को एक दिशा देता है। भारत के नृत्य-नाट्य में मुद्राएँ और चेहरे का हावभाव तो विस्तार से बंधे होते हैं, लेकिन मंच पर पात्रों के पारस्परिक सहयोग और उनके कर्म-गठन के लिए नृत्य-लिपि नहीं होती। वर्तमान भारतीय नृत्य-नाट्य पश्चिम प्रवृत्ति के अनुसार अभी हाल ही में उत्पन्न हुआ है।

उदय शंकर द्वारा:

वह आधुनिक भारतीय नृत्य-नाट्य का सबसे बड़ा रचयिता है। अपने नृत्य-नाट्य 'राधा-कृष्ण' में वह स्वयं राधा बनी और उदय शंकर को उसने कृष्ण बनाया। यहाँ पावलोवा के साथ काम करके नवयुवक उदय शंकर के मन में सोयी हुई नृत्य-कला जाग गई। उसने यह भी जान लिया कि भारत की नृत्य-कला अधिक विकसित और भाव से भरपूर है। वह नए नृत्य-नाट्य रचना की तीव्र अभिलाषा लेकर भारत लौटा। उसने नृत्य-नाट्य को कई स्वाभाविक और तीखी मुद्राओं से भी सज्जित किया और इस प्रकार रचित नृत्य-नाट्य को पश्चिम की माँजी हुई व्यावसायिक कला द्वारा प्रस्तुत किया।

नाट्य की विशेषताएँ:

» कथानक – नाट्य में एक सुव्यवस्थित कथानक होता है। यह आरंभ, मध्य और अंत में विभाजित रहता है।

» पात्र – इनमें विभिन्न पात्र होते हैं जो कथा को आगे बढ़ाते हैं। प्रत्येक पात्र का स्वभाव, भाषा और आचरण अलग होता है।

» संवाद – नाटक का मुख्य आधार संवाद होता है। पात्र अपनी भावनाओं और विचार संवादों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

» संघर्ष – नाट्य का प्रमुख आकर्षण संघर्ष होता है। पात्रों के बीच मतभेद, परिस्थितियों से जूझना और समाधान खोजना नाट्य को रोचक बनाता है।

» रंगमंचीयता – नाट्य रंगमंच पर खेला जाता है। इसलिए उसमें अभिनय, हाव-भाव, वेशभूषा और मंच का महत्व रहता है।

» समय और स्थान की एकता – प्रायः अच्छे नाटकों में समय, स्थान और क्रिया की एकता देखने को मिलती है।

» रस और भाव – नाट्य में करुणा, हास्य, वीर, शृंगार आदि रसों का समावेश होता है जिससे दर्शक प्रभावित होते हैं।

» नैतिक या सामाजिक उद्देश्य – नाट्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि सामाजिक, नैतिक और शैक्षिक संदेश देने के लिए भी रचा जाता है।

निष्कर्ष:

आधुनिक नाट्य और रंगमंच ने साहित्य और समाज दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह केवल मनोरंजन का साधन न रहकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को सामने लाने का एक सशक्त माध्यम बन गया है। आधुनिक नाटककारों ने यथार्थवादी जीवन चित्रण, सामाजिक न्याय, स्त्री-पुरुष समानता, जाति प्रथा, स्वतंत्रता संग्राम, वैश्वीकरण और आधुनिक मनुष्य की मानसिक उलझनों को प्रमुख विषय बनाया। आधुनिक नाट्य और रंगमंच जीवन का दर्पण है, जो व्यक्ति और समाज को आत्ममंथन की ओर प्रेरित करता है। जो दर्शक को सोचने, बदलने और समाज सुधार की दिशा में आगे

बढ़ाने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. अंतर्जाल
2. रंगमंच, बलवंत गार्गी, पु.सं - 212 – 214
3. रंगमंच पु.सं - 213

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.